

गङ्गाधर

गङ्गाधरगिति॥प्रकृताल॥चक्रिर्द्वैतलर्कं०त्रचक०मषलरवित०ग्री
धनू०उत्तरगिरमाला२सुनचक्रिचक्रिर्नया०हसवितरवित०गगनभाति
वैरत्रिवाना२॥५॥अं०गगिहृदव०दभानकोला०रुजानाथ०ग्रीसी
वननाया॥॥वक्रकनोटकहाथधनिया०कं०दिनद्वैखदारा
२सं०ठठागिनि०कमलविहसि०ग्री०महासुखभतिप्रसाद२॥॥

गङ्गाधर

वक्रवात्राहिआलिङ्गसर्वत्र०नावयिवद्वीहरीग२वाकलिकीलधि
क्रीडति०हृदव०अं०उवदलनप्रसाद२सहजसुद०सुत्रेयागमवी
कल्पि०हृदवचनप्रसाद॥॥प्रज्ञाआलिङ्गसहृदवनीलवर्त
विलागयिभक्तकर्म॥॥२९॥नागहृदवनालइरुमान॥
॥गङ्गाजिनउर्द्धा०धनिया०कमलकलिगमं०गवाना२उमा

नृकनति कृधन गि मू ल वामखश ग कपा लन ॥ ॥ श्री सर्वप्रार्थना वाक्ये
 उक्तं वै नाना ॥ ॥ मानयिष्ये वापि यापि प्रमाया सं ह गुरु भवता ल
 लिनार ॥ ॥ पा मंत्र कर्म उद्गाद म स थ धनिया उ न न नि प्रमा ला २ वि
 भ कलि म नृ उ वी ड क टा शत व्या पु व म म ष ड् म डा ॥ ॥ आ लो र प्र
 त्या ह न स चा प यि न भव न काल ना ति दि न म डा मो स ह नि न स्म हित क न

कामय य उ म्ख भति वि क ना न ॥ ॥ दृ गी स वी न वि न ग्य न ना य क
 ठि नि च क म हा बी न की गा २ क र स स ना ग वी न भव न तं क यि स य न र्हा सा न ॥
 ॥ २० ॥ ना ग जन वर्हा ॥ ताल अ न मा थ ॥ दि पु ज दि म्ख त्रि नि न य ना
 २ म क ट क म दि गी व ना ॥ ॥ ते ना ता ३ ॥ ॥ वाम क गी ट क २ द हि न क
 न ति २ स उ आ स न र वि ह वि ना ॥ ॥ सूर्य मी उ ल मा म ना ३ व म

वि
 ५५

वि
 ५५

इति रत्नमित्रमालासूत्रम् ॥ ॥ सतगुरुचरणरमित्रगतधनियार
नित्यं वदन्ति रत्नमित्रं ॥ २४ ॥ इति भाषाविता ॥ ॥ नागमालावतास
मथ ॥ ॥ यज्जिनिधालिवतालिर्वजालिनिर्हिषिनिद्याप्रिनिर्द्वक
उत्सादिनि ॥ न मिमिग्राणागर्भवन्मन्त्रा ॥ ॥ प्रिनिननुदवी
प्रिनुवनप्रवि ॥ ॥ पूर्वउरुनपव्विसदक्रिस्तदिगदवीरणदिनि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

दिपिनिचउसिक्काजनी ॥ ॥ चतुत्रदिगतुक्कः सनंतुक्कावी २
 छिनित्रीनिदवीनाचतुदवी ॥ ॥ हरिहरवक्कः इन्द्रहरगल २ धा
 उक्कागिति सुमनसंतीव ॥ ३२ ॥ गगमासव ॥ तालमाथ ॥ उक्कददन
 नल्लमकट आसीकनारचतुर्तुक्कखप्पल्लकन धनधनी ॥ ॥ नमा
 मि श्रीमद्ग्रीपद्मनृथवगा ॥ ॥ सयन आसापतिपूत्रितधनि

प्रवर्तितगाली ५

५५५५

दहिनशीगक्षपति-वासग्रासहाकास-सगलमंडलमा-प्रहसितस्थिता
॥ ॥ सुखिहंसात्राया-विष्वादिता २ भूतभवदुवाविदूत्रित
रुनक्ष ॥ ॥ वज्रधनप्रसादिन-दाहृत्तनयिपा २ गुरुवतनमा
लि-सिद्धिवनदाता ॥ २२ ॥ नागमाहव ॥ तातमाथ ॥ ॥ पूर्व
दिगदिस्थित-हंसासनिदवी २ वंदुबदनिदवी-धमि
धमिन्नतिगुली ॥ ॥ नमामिगुहंतेवसुधामात्रि

कागक्षपतिकुमाना ॥ ॥ अफहंतेवअकथागिनि-आलिगक्ष
॥ ॥ लाकावदनिमहितमयूनासनीदवी २ विदुपाप्रधमि-वै
पुयिदवी ॥ ॥ कदनधनरूपा-वागहिदवी २ कुरुमवदनी-वै
यनिदवि ॥ ॥ कनखधमिन्न-कैकालमरुति २ प्रलमामिदवि
ग्रा-महालक्षिसगक्ष ॥ ॥ ३४ नागवर्तललित ॥ तालरुजमा
न ॥ अफदलसनीजउहवप्रकाशित २ श्रीधममृनिवनधन

वर्तितगाली ५
५५५५
तहायने

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥

लोचना ॥ ॥ दहिनवकुपाहि वासक्रमलमाहि नमानि श्रीधरा
यमहमृनि ॥ ॥ दहिनकिकिनी धनः वासकृति का पातु
वि यितु यिवन वसति अहयप्रदाता ॥ ॥ कारस्थमानसनिर्मलहृद
याः ऊगतउदानलवितुवप्रदाता ॥ ॥ ऊनमरसुगतवनलकनल
तुसुहृमनलममाकप्रदाता ॥ ३५ ॥ नगहैतव ॥ तानवद्वर्क

धर्मनाम

कालधर्मनाम ॥ ॥ यमनाम वाहन मानसं ज्ञासन विष्णुनिवाहन
॥ ॥ यमानकपीन दणकाधहीन तथादधिनीन मीतलकील ॥
॥ खगपधवल कूतलकर्ण हीमतिनयन वसुधाहृत्तल ॥ ॥ क
लिखमृज्जन तर्कनिपाथ धनैव तु कन अद्वाहृहास ॥ ॥ प्रहृति
कप्रहृती वीनसं वृत्त गलवीनसं न्य वीनैव तसहित ॥ ॥ य
घातकवीन विघातकवीन नैलाक विजय कालानलस्य

रिये नलोका नं ॥ १९ ॥

विनये जात

हृदय वंशः पत्रमाध्व वंशः उषा व वंशः सुहृत्मा वंशः ॥ ॥ अक्षर
यह नलः अक्षर्य हृदय वंशः वंशः वंशः वंशः ॥ ॥
सतम्भ वंशः मल्लक वंशः हृदय अक्षर वंशः यमार्तक
गातं ॥ २६ ॥ नागकदम्ब ॥ गालपट्टक काल ॥ नीलकण्ठकान्त्रक

नयनं ॥ २६ ॥

लिन किनल २३ वंशः गल कंठः अक्षर वंशः ॥ ॥ नीलवर्णद्वीक
निकपाला २३ गगनमात्रकानिः अक्षर साजननी ॥ ॥ अक्षर वंशः
अलिगल समाधिः अक्षर वंशः कनाठकधनिया ॥ ॥ हृदय वंशः
नक्षत्र वंशः अक्षर वंशः अक्षर वंशः अक्षर वंशः ॥ ॥ अक्षर
नक्षत्र वंशः अक्षर वंशः अक्षर वंशः अक्षर वंशः ॥ ॥

सुनश्चर ॥ २६ ॥

श्रीमद्भक्त

नागध्वजमाला ॥ तालजप ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ पदः श्रीकृष्णाय नमः ॥ नमः ॥
नमो नमो वदियन्तर्ग ॥ ॥ नाथः नाथः नाथः नाथः नाथः नाथः नाथः नाथः नाथः नाथः
यपद ॥ ॥ वदुता किन्त्यादि गणपतिवन्दनं सितमन्त्र गणपतिवन्दनं ॥
॥ ॥ इति वन्दनं जातिः जगन्नाथः मन्त्रं श्रीगणेशाय नमः ॥ सहाय हन्तर्ग ॥ ॥ धर्म
धर्मनाथः केवल हन्तर्गः इः पानसुसान्नालनिधितर्ग ॥ ॥ साकान्तिना
कान्तिः विध्वनिर्जन पदः श्रीगणेशः जलमनिष्ठः जन्तर्ग ॥ ॥ श्रीमान्नाथः व

श्रीगणेशाय नमः

धर्मनाथः वदुताः प्रकृतिर्नवचन्तर्गः सहायः प्रस्थवित्री ॥ ॥ सन्तर्गः चन्तर्गः नि
नाथः नसुखानन्दः नन्ती श्रीगणेशाय नमः वन्दनं ॥ ॥ धु ॥ नागवन्तर्ग ॥
तालसाथ ॥ ॥ वासवः पितृवन्दनः दहिनकन्तर्गः पायलनन्दनः सितमालः
विता ॥ ॥ धु ॥ नाथः यिन्कृष्टिः वदुताः गिनि ॥ ॥ त्रिनिष्ठः वदुताः त्रिहवनः
॥ ॥ धु ॥ स्थूलसूक्तिनादवीः निजिनदवीः भूयपादवीः भूयसंहवा ॥
काहमः सुहयिपाथः वदुताः वदुताः नागद्वयः माहकन्तर्गः नन्दुपिता ॥ ॥ धु ॥

मन्त्रनागः श्रीगणेशाय नमः सहायः प्रस्थवित्री

गामे इत्यादि

सुखिर्हानही नारु हि कवीर माउमार्ग क विउ कूपयि ४५ न ह ॥ ५॥
नाग कनदि ॥ ७ कता ल ॥ श्री मरु नाथ वर महायी न विरु यिया २
ई ड हा सखे म् क न नाग वाथ ल ॥ ५॥ न मा मि २ श्री मरु क मा त २ क
ग दि ५ व त र ग त ग र र ड व न द्या यि ता ॥ ५॥ प्र सु क ध न र ड र प र ड र ना या
श्री धर्म क उ स्या न न पाल विरु वि ता ॥ ५॥ उ ग न ना थ र ग न ग र न नि र

सुखिर्हानही नारु हि कवीर माउमार्ग क विउ कूपयि ४५ न ह ॥ ५॥
नाग कनदि ॥ ७ कता ल ॥ श्री मरु नाथ वर महायी न विरु यिया २
ई ड हा सखे म् क न नाग वाथ ल ॥ ५॥ न मा मि २ श्री मरु क मा त २ क
ग दि ५ व त र ग त ग र र ड व न द्या यि ता ॥ ५॥ प्र सु क ध न र ड र प र ड र ना या
श्री धर्म क उ स्या न न पाल विरु वि ता ॥ ५॥ उ ग न ना थ र ग न ग र न नि र

५॥ उ ग न ना थ र ग न ग र न नि र
५॥ उ ग न ना थ र ग न ग र न नि र
५॥ उ ग न ना थ र ग न ग र न नि र
५॥ उ ग न ना थ र ग न ग र न नि र
५॥ उ ग न ना थ र ग न ग र न नि र
५॥ उ ग न ना थ र ग न ग र न नि र
५॥ उ ग न ना थ र ग न ग र न नि र
५॥ उ ग न ना थ र ग न ग र न नि र
५॥ उ ग न ना थ र ग न ग र न नि र
५॥ उ ग न ना थ र ग न ग र न नि र

गामे इत्यादि

गामे इत्यादि

मालाश्रीलिङ्गः कायः किनवता ॥ ४॥ सनपालिनमहावीना ॥ ५॥ दंडुव
 नालः लालजिका धृष्टिउवकं ॥ २५॥ गभा एनं वं हविर्दहा
 शीषास्यापितरुर्जकता ॥ ५॥ श्री देवमहाकालः प्रिहवन्यापितः द
 वा श्री देवमहाकालः प्रिहवन्यापितः द
 वनहाकमलवदिता ॥ ५॥ ५१ ॥ या गधना ॥ न कता ल ॥

रम्यमामाधिपति
 केसदप्रममामाधिपति
 ल ॥ ५॥

गजप्रभ

गजप्रभति नयनर्ता उ वमूत्रति नृपाधिपति गजप्रभ
 रद्वनमहिमकूटा नलरुतक्षः नरति किननसंका ॥ ५॥
 मात्रियाविघ्नः मात्रियादप्यः मात्रियादः स्वविद्वत्ता रमात्रि
 या माया मात्रगता मा मरुवपमदः स्वनासिता ॥ ५॥ पत्रग
 वासी कसुवजहसः हिदीपालदहिनकता रमृगत्रधनृस्व
 दा गधना कपालहलकवृ वास ॥ ५॥ विविद्रवकावृदतिहम

वि ॥ गमदी ॥ ५॥

विं

ऊदा जतममि मठिता २ लं व क न ~~न~~ लं वी द न ल म ह पा यं ल
रिमि रिमि वा ऊ न ॥ ॥ त्वा त न ध त न ला ग लि त म् प्र वि क म् प्र व
अति सुंदरा २ दि ना द ला त्व म् प्र स र दा तः न म् प्रो क्त २ गु ग म् प्र ता
ग ग ग ल अ न द र्ज म् प्रान ॥ ॥ विं म् प्र स र्ग र ह वि धु वां २ म् प्रो क्त
त्र विं या चिं न सुं सुं तुं वां २ नं म् प्रो मि २ वं ग म् प्र त सुं सुं लं वा २ सुं य नं
म नि हं द यां ॥ ॥ विं म् प्र स र्ग यिं कृ ट म् प्र त म् प्र ना ह न सुं य नं ति नं हं द

विं म् प्र स र्ग यिं कृ ट

विं म् प्र स र्ग यिं कृ ट

निं लं पि तां नृ न हिं तं व यं नं २ प्रै वं ति नं म कृ ट म् प्रो ति ल य नं धं
म व कं म् प्र द्रा कं लिं ग म् प्र तां हिं २ धै नं वां प यि प्रै हा पुं वं म् प्र स
॥ ॥ सुं ग म् प्र तं नं मि नं तं वं य नं २ हं नं पि पं त म् प्रो य वं डं ति
तं गुं न ल य नं ॥ ॥ ग ग क ल यि पं व म् ॥ ताल अं त म् प्र थ ॥ उ र्ध
का द घ यां क्ति २ स र्ग म् प्रो मि हा कृ ला २ ग त क्ति प्र ला क्ति २ सुं य म्

उ र्ध का द घ यां क्ति

उ र्ध का द घ यां क्ति

उदितशुवन

नागपद्मं त्रि॥ ताहसाथं॥ उदितशुवनकप्रताप्तनकि
रुहिरलहिकपदाधनसूक्ष्महा २ निर्मलहृदय कनकम
यताथ २ दहिअहयवनप्रदाता ॥ ॥ तुम्हदेवज्ञज्ञ
ज्ञज्ञतेक्ष्म ॥ ॥ निजुवनव्यापित रुगतउद्धात्रिया २
प्रक्षमासिद्गमलाकेप्रता २ कनकप्रलमहिहात्रवि

उदितशुवनकप्रताप्तनकि

ज

हपिता २ कनकसूत्रवृत्तध्रि २ वासकमलधनः
वत्रदन्ताहृत् २ सहजानंदमूर्ति २ सूत्रनत्र
किंनत्रगणप्रक्रिया २ ललाटचत्रमित्रगतध्रिया २
निमित्रघातवृत्ता ऊप्रदाना २ दत्रनपापद्वयहृत्
२ त्रकवेत्तसुख नहसुलाचना २ सर्वलक्षणसंपूर्ण २ त्र

उदितशुवनकप्रताप्तनकि

विविक्तचक्रभात्रिलाकं शत्रु २ मन्त्रमन्त्रं तत्तद्विविक्तया ॥ ३३ ॥
द्वित्राशर्वकाला ॥ गानयनकात्र ॥ ॥ धर्मिहिरवनाः उगुपुर्वजः
यस्य स्वपदं जडाचन धर्मिहिरा २ गुन्यालिङ्गाग्रः तन्नाहनक्षः वज
धर्मधनननमित्रमाला ॥ ॥ नमामि शिवागत्रिका विजया २
विजया ॥ धर्मिहिरवना २ वृधधर्मसंयथा विनयप्रतिज्ञाः

यादगत्र स्थितः उमामहं शत्रु विजया ॥ धर्मिहिरवना २
गा ॥ ॥ न कृष्णलावनः क्राधज्यहवाः पत्रिप्रितदगा क्रा
धः विजया २ स्वज्यपुस्तकधनः मानसं हानाः विनवि
क्रमप्रदं विनकिनना ॥ ॥ यनगुयासुधन दानवनागमः
मानवसं हाना विवृधगनः सुयनसुतिना ॥ ॥ कायवा क

पुष्पिणी नवत

चिह्न ध्वजधरणाः किलिब दहाः निर्मल गतिना १ एव
एय हनना गिगगवर्गः सुगग्वनश्मः शिपगगधनिषा ॥ १
नागकनंदि ॥ २ कनान ॥ धुगि धानवदन ॥ धुगि वांगमृशगे १ ह
ज्ज्हा एवन विहविग देहा ॥ ३ ॥ भनाना ३ नमामि १ ३ ॥ स्व
महाकाला ॥ ॥ दहि नकनगि स्व ॥ वामा गिगुवा १ स्वः पनर्म

पुष्पिणी नवत

ज्ज्हा लः व्याघ्रवर्म हविना १ ॥ ॥ सुकरमात वलः दयनि हे
ना १ सुनननवर्दिगः एव एय हनश्म ॥ ३ ॥ ॥ अदि सिद्धि व
न दायक देवा १ ॥ ३ ॥ एवन विना ॥ ॥ महाकाल सुनना ॥ ॥
नागवना ॥ ॥ लमाथ ॥ ॥ मय नर्तक मः का ॥ जित आत
नमि नृविदत्रः जिननाज सुहृद्व ॥ ॥ पुनमाभिः ॥ ॥ नाक
वज्रकन लोका ॥ ॥ जागतिना नादविः नमनि ह्युत ॥ ॥

ह न पि व न व कं ॥ दान ल वा वृ नृ प द वा नः न मि स दा
ग ध म य क दे व ॥ २ ॥ सूर्य स मा कृ त क र्ण वि ष म लः ना
न द नृ वृ नृ गालि न ना लः प त्र स न स मा मृ त वि क ल हा नः ना
मि स दा ग ध ना य क दे व ॥ ३ ॥ पा ष ड् ली कृ ष नी त ज न
रुः का म ल पी व न कं उ ल ह रुः नं दि क ना ह न मृ त ज

सू रा वः न मि ॥ ४ ॥ कृ त्रु क नं दि न हं गि स हा यः वि क
द मृ षा कृ त ह न नि का य ॥ मृ ष क ना उ कृ ता स न रा वः न मि
॥ ५ ॥ ना ग म भा ह न कं ध न हा लः लं व नृ नृ द न हा न मृ दा न
ना षा द ॥ ना मृ ष नी त स मा य न क नृ ष ड् प द वा न न र्ब न ल क र्ण
ना कृ त ना य न द न स हा वः न मि ॥ ७ ॥ न ल वि ह ष

विनाशमर्तुः लंङ्ककात्रह लालसुपात्रं ॥ घाघत्रनाद
विनाशितकवः नासि ॥ ८ ॥ बालसुत्रहतिपतिनला
वतिनं दवविनायकसुत्रविहारी ॥ यवप० तिहदाशु
विहारीः ननु हवर्तुसहादयविद्या ॥ ९ ॥ ॐ तिगाममम
कसोईसमाफ ॥ ॥ नमामहनाथयन ॥ मङ्गला

कनाथानि नवत्रमृत् नोर्त्रवत्रवजसुत ॥ मङ्गलाः वज्र
वानिसुषवत्रहिमरीः गह लोहदुपात्रः बुद्धावलावनादि
सिहवनमिति नंतिंनुनि सपदषः सुहृत् ॥ १ ॥ हृष्ट
कात्रवर्जः पशुपतिदमवर्ज्यं ननु हर्तुं ॥ पिबं हाना
हर्तुं जीपुमनयनहर्तुं केताञ्जसहासमा ॥ ननु

The image shows a close-up of an open, ancient manuscript. The pages are made of a dark, textured material, possibly leather or parchment, and are covered in handwritten text in a script that appears to be Devanagari. The text is written in a dark ink, and the pages are severely worn, with large sections missing and the edges frayed. The binding is visible in the center, showing the stitching and the underlying structure. The manuscript is placed on a white background.

तन्निहृदयनाम्ना ॥ ५॥ दामोदरध्वलपिया ॥ १॥ न्यकैरुत्तमशालि-
 गनसैव नृध्वलपिया ॥ २॥ वज्रता नाहिः शालिगनसैव नृध्वलपिया
 रक्तगीसवीनविप्रध्वतः रुद्रि २ तहि २ श्रुष्टमममम २ श्रुनृहृतसर्व
 देववज्रध्वजगदिगममतिवयनसैला व २ त्रितवनतु व २ कृताया
 तनाशो त्रितवनतु व २ कृवीनारत्रिनि तवननवनाह २ प्रसादि
 प्रहृतिजगोनकाका ले २ ॥ ५॥ अहिनिष्ठासतग्नृवीनाकुना

॥ २ ॥ कादिलो गोता व म् हा वं २ ॥ ज नाम न म् त य व र्ध न भो व य ॥
 य भो र्ग ग न र्हा वं ॥ ५ ॥ नो ग र्ह न वि ॥ ताल इ र्ज मान ॥ कल म्
 र्च न वि धि र्प चो प हा ना ॥ पू ज या मि त् द व ग ल ॥ २ ॥ वि वि धि उ य हा
 न नृ त य गी त व न ॥ उ म र्द यं भु ध्नि सूर म् ग ला ॥ ५ ॥ उ व ज्ञा मृ त
 द क र्म द्वा कि नि स म् हा र्वा तु हा व क अ द्र य र्प २ ग ल भ स ग ति ॥
 श्री ल ख मि स हा को ल ॥ उ स प्र ति षि त व र्ज स्वा हा २ क न क रू प

जगज्ज्योतिः वज्रवदकप्रथमसंख्ये २ अथ पत्र उर्ध्वं पुनः हृत्
 धनं वज्रवद्विषयं द्वीगकमजुल २ त्रिंशत् लम्बं वज्रवाद्यं
 नयति तदनं कर्मोत्तरं २ उं हृत् श्रीं हकारं हृत् त्रितव हं तुम्
 त्रमृताकारं लवयति २ तव कर्त्तुं मय हृत् ता मृज्ज्वारं
 लिप्यमाद्यं वज्रं इतथा धाविता ॥ ध्रु ॥ नागनाठक ॥ ता
 ल इज्जमान ॥ **त्रक वदन** त्रियशायनसुंदरि २ अश्वा दं

पुनः द्रुतनतुं किं तल ॥ ध्रु ॥ तुम्हदविवारलिमा मकि
 दकी ॥ ध्रु ॥ जगत्प्रभादिने मयनसुत्रं ॥ ध्रु ॥ आगम
 वंद्यता सवधानं २ श्रीगधत्रमदिजागरुडयक्ष ॥
 ॥ ध्रु ॥ पर्ववृद्धसूचसत्तुक्ष्मं सह पुत्रागिनित्रेयाह
 र्वं तु हं व ॥ ध्रु ॥ सतगं वृत्रसमिन्नगतप्रतिमा
 तनयिवाकवज्रसूत्रार्थ ॥ ध्रु ॥ ॥

उमकु २५

नौ गगन धातु हत वि॥ नाल रूप ॥ **उमकु दह** नप र शान
न रूप २ पंदा मिया त सप य ता नि पूजिया ॥ **रुद्र** दु व वलि
त्राय त्रि नु व न वीता ॥ ना वी त म ला पे क स म या न द ॥ ॥
वि त वि त म त स ह ज न द २ क न क म ला वर्त ह द या न
द ॥ ॥ प य व द प व द न स र प २ द वा स त न त पु ना दि त
हि द या ॥ ॥ **ॐ** आ हू **क्री** वि **उम** ध न या न २ उ म र द न ध

१। व म ५१

नि वि त मा म द ॥ ॥ **त्रा** ग ना त क ना ल द उ मा न ॥ **ता** न
मं उ ल मा रू ह त ह का ता २ आ लि का ति द रि चा प रि ह
२ व ॥ ॥ न मा मि २ जा नि ता तं ह त्रि ह व न ना थ ॥ ॥ व ज
वा ता हि आ लिं ग म न द य ॥ ॥ **ॐ** ॥ कृ **ॐ** वर्त य न् म् स्व ति
न य ना २ वि ज्य कृ लि म न द रं द उ द ह त ॥ ॥ **गो** कि मि

५५
५५
गामाखंडाहा नृपिनी र वतुन द।वी की उंति विलासा ॥ ॥ हृषि
तषट् सडा कृती जवा प्र ज्ञन ह नयि ज नृप सव ज ह नृव दासा
त्रां ग सूप निष्ठा ना ग क ॥ न क ता ह ॥ **तिदल** स ग नृह दिन क ने
मं उल ना जित ति ह व न उ न नि र ग ग क न उ त ति नि न य नार
सा त व तु न ग न क द नी ॥ ॥ द वि क र ति क पाल ध ना ॥ ॥ ह
षि त न न मि त मा ला क म ल कृ लि ग द यि ता न वा रु यि ना व यि

सहज ह नृपिनी ॥ ॥ व कि जि प्र क र्ण कं उ ल कं ल कं ठ क
ग ल र हा थ नृ व क क श्रि या उ नृ ब ल व न नृ प नृ ह ष डि ॥ ॥
ह व प ल या न ल नृ उ ध र नृ दा हि नि स्ना न क ना या र हा वा हा व
वि व र्जित नृ नृ नृ ग ग नृ स नृ पि नी ॥ ॥ प द स व ज प द जि न
ग न ध रि या स व यि हा स कृ लि ग र नृ नृ त सि डि मा उ दा य
नि ॥ ॥ पु न मा मि ग व ज नृ जि नि ॥ ॥ - - - - -

प्रयत्नः

राजकद॥ ललमाथ ॥ ॥ इयं वायुलिदं विद्येन ह रस्य
 तस्य तास्य वीदितयन ॥ ॥ तं ह मावतिपादकमनम
 हिमंति न नउग्रननन काता १ हाउमहउ आ हननवि
 हसित नउग्रननन काता २ त्रिनित्रिनित्रि नय नुनय ना
 ना ॥ ॥ जितप्रिष्टिदुनध्रि ककु लनयन कसुत्रि
 कर्षूत हनयितं बाला ॥ ॥ कनतिकपाल ध्रिमुं उमात्रह

प्रयत्नः

पिता स्कंधवद्राज कपाल ध्रिना ॥ ॥ हनयिपूततवज
 वायुलिदासं शावजनागिनि वनदप्रसाद ॥ ॥ राजज
 त्रिनालमाथ ॥ असलजिद ससत्रा नहविनाजिता २ त्रिहव
 नसवतावन नकनपा ॥ ॥ जिकि निनामा स्वउमाहा
 रुपिनी २ शादवित्रिज कना त्रिहवमाता ॥ ॥ नाहिम
 कउ लमाथ पुवन ज्यती २ त्रिनि हदिनित्रि नयना ॥ ॥

[illegible]

कायवाकविकृतिनिवृत्तं २ दानपतियाष्टुहृत्तुवतात्तु
॥ ॥ आगयोगिनीमन्त्रीसमन्तसंताव २ अष्टममन्त्री
हृत्तुव ॥ ॥ ११ नागहृत्तुवितान्तरय ॥ पंचतथाज्ञातमन्त्रि
यान्तरसमयावायविष्णुहृत्तुव २ दणदिगदष्टवन्तः शत्रुह
हृत्तुव ॥ दानपतिविष्णुनिवृत्तान्तर ॥ ॥ १२ दंडदंडवीरवी

नैव न वलिदानदत्त दानपतिः तत्रवता न ॥ ॥ पूर्वव
 नाचन दत्तिः नत्तसैतव पश्चिम अमिता तत्तिनया पिया
 नैरुत्तुन अभाय सिद्धि मा अ अत्ताय चात्रिमान चउचक्र
 थापिया ॥ ॥ समाधिः सैव न मा अ कालचक्र हवत्त
 विवदत्त नैरनाता वाधिसत्त आशी वीदमत्रिया चात्रि

मानचउया यिया ॥ ॥ सिंह नादवा क्रिया ॥ उभा
 रवात्त अ वृथा गिति मत्रि सि क्रिया ॥ उमरवात्त
 या अ वृथा गिति मत्रिया ॥ जाले धनि प्रग कर्षा ग
 वयिया चात्रिमान चउचक्र थापिया ॥ १२ ॥ नाग
 न विताल इर्जमान ॥ न स अ का रत्त रत्त रत्त रत्त
 क्विसत्त उत्त रत्त रत्त ॥ ॥ नैनाई रत्त नैनाई रत्त ॥ ॥

धवलसुसंखवदहध्वरसुसुहादियकात्रहानुहान ॥ ॥
 ईदआलिगलकागध्वरवकुद्यभमृदालयमृति ॥ ॥
 मायाविद्वद्विनिनजगत्सुहादियवकुसुतपनभध्वर ॥ १३ ॥
 नागहर्नवतालइजमान ॥ नमामि रजिनकाकुकरैतक
 वतुनमृतिआलंकृता रपयदानपयध्वरुपावृद्ध
 मआलयध्वना ॥ ॥ ननाइरुगगतसंसा लउदात्रियाम

नोहृत्तनमाह्वरपयजिनध्वना ॥ ॥ नमामि रजिभक्ति
 पूनध्वनमदिसिद्धिवरदायनि रइतिरुहृत्तनसर्वपापकुर्य
 कनदानपूष्यनृदमाकुप्रदा ॥ ॥ नाग तालमाध
 नमामि रधर्मध्वरुवागीध्वन धातुकाद्वापत्रिमंतिता
 धातुकात्रलजनपूनकातासुर्वदेवपत्रिमंतिता ॥ ॥
 नमामि रवागीध्वनमंठल पद्मगितिनिवासिता रसुतवि

प्रवर्ग

विष्णुहित इगतिनाशन प्रहमा मिडिनचक्रं ध्याता ॥ ॥ नैनाद्वै
नैना ॥ ॥ १४ ॥ नागधूमता ॥ तादूर्जमान ॥ **त्रिचक्र** विष्णुम
उलमा अस्मि तिस्रानदमृतिधनार वज्र वा नाहि आलिङ्ग
नसर्वत्र नानात्रुमि महाकुलार ॥ ॥ नैनाद्वै नैना नैना
द्वै ॥ ॥ नीलवला चतुर्वक्त्र प्रतिमुखत्रिभुज पत्रमानंद
मृतिधनार विष्णुवज्र अर्द्धचंद्रकटामकूटधनहातश

हस्तसहस्रतिताना ॥ ॥ वज्रचक्रं गजचक्रं मत्तमत्र खदीग
धनवीरमानंद मृतिधनार कनतिकपाल पत्रध
पाधधन त्रिभुलवुक्त्र निर्वधना ॥ ॥ दिगविदिग
काकाधमदिगमदादियात्र सहजानंदमृतिधनार
नमामि रश्मीवक्त्र सर्वत्र सततचक्रल श्रावधिताना ॥ १५ ॥

हानज किनि आर्लि गिता २ इति न हन ह अति धवल तु द हा हा
 न ज कि नि पत्र म ध्वनि ॥ ॥ न ना ई ई ई २ न ना न न ई ई ई
 ॥ ॥ द दिन क न स न वा स व न र ध्वनि क य द ग प्र द क पा ल
 ध्वनो २ व इ द्य ० न नि ला च न तु द नि प्र ह ति न क्री ध ई ग
 त्र वी या ॥ ॥ वि वि ध मा न व ल वि द्य वि ना भ न मृ दि सि दि व
 प्र दा य नि २ ह न तु ह वी तु नि व ध न ना उ न भा य य उ ग न ना

न यं तु ॥ ॥ प्र ह व व क प न मा ग न ह ग ति ला वी तु ह वी तु नि प्र
 ध्व प्र द २ उ न म २ क न पा न क य क न आ दि वृ द प न म ध्व ग ॥
 ॥ १ ॥ ग ग न म क ति ॥ तू ल मा थ ॥ क म ल वि का नि त स्थि
 ति द हा स न कू म द प्रिय व द सु म द हा २ व तु न व द न क व ल य द ल
 स न न प्र प्र का णि ता ॥ ॥ न मा मि श्री श्री म हा मी र श्री स क ल
 ग र हा ना या स न ग न ॥ ॥ क म ति द ह न हा न प्र का णि त

क म ति द ह न

दि ८

सर्वहृत्माननिधिवप्रगता ॥ ॥ प्रथमकनकद्वयकानितवैकुण्ठं ०म्
दामालिगहनाडितारद्वितीयैकधनरुतीयसुनलीधचतुर्थव
प्रसवकनधना ॥ ॥ उहयहृत्पाणदुवनधर्मकापवतुर्थवामध
न. एलकोरनननकूट. निप्रप्रलित. किस्विपनाधननृधिवना ॥ ॥
निर्वदिहृ०० निमिहृहनिता. त्वहृहृननिधिवप्रदारनृधिवना ॥
नहमागत. पनमाद्यज्जन्मनि ॥ १८ ॥ नयनामकनि ॥ तालमाथा ॥

३२५
हृनीदधसुतानननाजीवलावनरगतितात्रहृकजासुन ॥ ॥ नमानिधिन
दवलाकितधन. जगतपालितत्रिहृधधना ॥ ॥ गंगायकासान. वा.
नपालितल. वमददहिन. नय. एमहना ॥ ॥ सकूटविद्यातित. अनि
ततधगत. अमनासुजनन. नहमागत ॥ चतुत्रज्ञाननचतुत्रपर्वध
खनिनयनवीदित. पदपर्वकज ॥ ॥ सतरत्रचनहृमलकधनही. तन
यिहृकाहृवहृवहृनहृ ॥ १९ ॥ नागकह ॥ तालषट्ककाल ॥ ॥

पवनक लननी लधन हिमं ल २ त इ पनिक न का र ल म ध व कि ॥ ५५ ॥
 भी मि श्री व कु र्सी व ल न व प द क म ली श्री व ज वा ना हि आ लि ग मी ॥ ५६ ॥
 आ ली का ली आ ली उ व न ५ ॥ २ व रु म नि म र्दन ए व ह य ह न र्सी ॥ ५७ ॥
 व द व द ना द ह न न य नां २ च न न स दू नि त र्सी व न व न ॥ ५८ ॥ वि श्व
 हि दू र्त्त सा र्ध नि ल ५ २ मी ति त म व ल कू ठ ल क न ॥ ५९ ॥ अ न क पं धी प

उ द पं र म म ग त को टि र्घं म म य द य क न ति ॥ ६० ॥ वा दि त उ म र्
 ध नि त र्घ दं ग र ती कू क म न पा म ति षु ल ॥ ६१ ॥ स र वि न म द न क्री
 स व र्त्त द र पी मू ष मू नि त क नी ट क र म हि ता ॥ ६२ ॥ क न ति स नी ज
 स न वि र्ध नि ता २ स अ ह न न वि न म न र्त्त ॥ ६३ ॥ स त म र्द व न
 र्त्त म र्क क ध र्त्त २ ह न यि स र्ध र्त्त वि न गी ती ॥ ६४ ॥ २२ ॥ ॥

नागहर्त्रवि ॥ तालजति ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ सगविगपुत्रवारुण
 जापूजितपूजसीतावंतलस्वरूपतर्कन ॥ ५५ ॥ खखखादिषोडश
 लिपूजाग्रंघघंघाठयघाठयविघ्नान्नर्पैवामिमानसर्पवसाजिन
 पौवज्ञानसर्ववलिना ॥ ५६ ॥ सर्वयक्रनाकसहस्रप्रतपिष्णचलीज
 पत्न्या नृनृगकठाकिनिद्रयिः अष्टमनमनमनः देवलिगृहकतुन ॥

॥ ५२ ॥ सम पात्र कुतुबानपतिः सर्वसुखसंपदम्पतिः २५
 धेवजर्थेव पुंजर्थेपिवधर्तः जिद्युधनातृकाहवर्तुन ॥ ५३ ॥ दान
 पतिः सर्वकार्यसिद्धिः सनीनथ सर्वसुखसंपदम्पतिः २५
 ससात्रतथगतवयनः साहाय्यकरहवर्तुन ॥ ५४ ॥ २५ नागवि
 हासनालमाथा ॥ उदिताललस्यपवनधृता २५ वनसी दामसी का

सतीता ॥ ५५ ॥ ध्यानइक नह यनि न्न ननिता २ अत्ययनि नैऊत भाऊ
गता ॥ ५६ ॥ दिनघनमं ठल नथ्यगता २ सुहजा मृतनस संवक्रता
॥ ५७ ॥ दग्ध मृति तयप्रतिनिहीता २ दवाहनन न ५८ ॥ नृमिता
॥ ५९ ॥ गर्भवीति पवतप निग्रनू लुगता २ वक्रवागाहि गुहपा
मम नृमिता ॥ ६० ॥ १० ॥ नागविलासता लमाथ ॥ इह

[illegible]